विवेकी राय के उपन्यासों में आंचलिकता

डॉ. दीपिका विजयवर्गीय
सह आचार्य
हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

ग्रामीण परिवेश में भाषा का सरल, सहज और स्पष्ट उपयोग होता है। हर गाँव की जनता वहाँ की क्षेत्रीय भाषा से प्रभावित होती है और ग्रामीण, आँचलिकता की बोली से ढली होती है। क्षेत्रीय परिवेश के अनुसार रीति-रिवाजों, खान-पान एवं वेशभूषा की भी विविधता देखने को मिलती है। हर गाँव के परिवेश के अनुसार उनकी वेशभूषा उनकी पारम्परिकता पर निर्भर होती है। ग्रामीण जीवन में लोग अपने मन की बातें आपस में करते हैं और अभाव में भी खुश रहते हैं। उनको नगरों की चकाचौंध से दूर शान्त वातावरण में ही आनन्द आता है। यद्यपि आज के दौर में ग्रामीण परिवेश में भी आधुनिकता ने पैर पसार लिए हैं, किन्तु इसके बावजूद ग्रामीण परिवेश का अपना अस्तित्व है, जिसको बनाने में किसान वर्ग का बहुत महत्व है। आज के दौर में ग्रामीण परिवेश में अनेक अभाव होने पर भी उनको भौतिक सुखों की कोई ज्यादा परवाह नहीं होती। उनका स्वभाव उनकी संस्कृति और उनके समाज में समाया हुआ है। आज के समय में ग्रामीण परिवेश का अस्तित्व बचाने में किसानों और सरकारी सुविधाओं का बहुत योगदान है। ग्रामीण परिवेश में सभी के सुख-दुख साझा होते हैं।

ग्रामीण जीवन 'ग्रामीण परिवेश' से तात्पर्य है-सादा जीवन । बिना बनावट का जीवन । आज हम इक्कीसवीं सदी में आ चुके हैं, हम अनुभव करते हैं कि शहरों के बनावटी जीवन से जब थक जाते हैं, तो शांतिमय वातावरण की आवश्यकता होती है। उस समय हमें गाँवों की ही याद आती है। गाँव का जीवन शांत वातावरण से भरा होता है। हरियाली चारों तरफ, हवा में सोंधी-सोंधी खुशबू और पक्षियों की चहचहाहट । उस वातावरण में जैसे जीवन के सभी सुख विद्यमान हों।

कथाकार शिवप्रसाद सिंह ने लिखा है-क्षेत्र या अँचल उस भौगोलिक खण्ड को कहते हैं, जो सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सुगठित और विशिष्ट एक ऐसी इकाई हो, जिसके निवासियों के रहन-सहन, प्रथाएं,

उत्सव, आदर्श और आस्थाएं, मौलिक मान्यताएँ तथा मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ परस्पर समान और दूसरे क्षेत्र के निवासियों से इतनी भिन्न हों, कि उनके आधार पर वह क्षेत्र या अँचल-विशेष इसी प्रकार के दूसरे क्षेत्रों से एकदम अलग प्रतीत हों।

ग्रामीण लोगों का सरल स्वभाव, सरस जीवन होता है। खेतों में खेती करते किसान और औरतें अपनी दिनचर्या में व्यस्त दिखाई देते हैं। पशुपालन गाँव का मुख्य व्यवसाय होता है। अपने घरों के बड़े आँगन में पशुओं का रहने का स्थान होता है। मुर्गी, बकरी, गाय-भैंस का पालन-पोषण वे अपने अपनत्व के साथ करते हैं। खेतों में अपनी फसल के साथ मेहनत करके अपना पालन-पोषण करते हैं। वहाँ सभी किसान नज़र आते हैं। 'गाँव में सभी के बड़े निर्णय, पंचायत पर निर्भर होते हैं। गाँव के सभी मसले पंचायत के द्वारा निपटाये जाते हैं। लोगों का विश्वास अब भी अपनी पंचायत पर बना हुआ है। उसी के फैसले को आखिरी फैसला मानते हैं। गाँव में सभी के निर्णय पंचायत पर निर्भर होते हैं। प्राय: सभी मसले पंचायत के द्वारा निपटाये जाते हैं। लोगों का विश्वास अब भी अपनी पंचायत पर बना हुआ है। उसी के फैसले को आखिरी फैसला मानते हैं।

'सोनामाटी' उपन्यास में आँचलिकता

ग्राम्यजीवन के समर्पित कथाकार डॉ. विवेकी राय की उपन्यास यात्रा का प्रारंभ 1867 ई. में प्रकाशित 'बबूल' से हुआ। उनके छह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें 'सोनामाटी' जो 1883 ई. में प्रकाशित हुआ, अपने गहन चिन्तन एवं व्यापक दृष्टिकोण के कारण महाकवित्व सदृश गरिमा को प्राप्त हुआ है। इसे उक्त वर्ष की श्रेष्ठ औपन्यासिक कृति मान कर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने डॉ. विवेकी राय को 'प्रेमचन्द पुरस्कार' से सम्मानित किया। 'सोनामाटी' में समकालीन जीवनसंघर्ष का व्यापक और गंभीर चित्रण है। ऐसा नहीं, कि इसका आकार विस्तृत है, वास्तव में विस्तृत इसकी कथानकीय पृष्ठभूमि है। 'सोनामाटी' विवेकी राय की एक प्रौढ़ रचना है। 65 अध्यायों और 464 पृष्ठों में इस बृहत् उपन्यास में वर्तमान ग्राम्य जीवन के विविध सन्दर्भों को उजागर किया गया है। 'सोनामाटी' में 'करइल' अंचल इसके केन्द्र में है।

गाजीपुर-बलिया के संधिस्थल पर स्थित 'करइल' लगभग चालीस-पचास किलोमीटर के वृत्त में फैला अंचल हैं। लेखक ने भूमिका में लिखा है कि इसका भूगोल, अर्थात् करइल-अँचल सत्य है तथा इतिहास, अर्थात् इसमें आये पात्रों एवं स्थानों के नाम कल्पित हैं। स्पष्ट है कि कृषिभूमि करइल को लेखक ने पृष्ठभूमि बनाया है, अत: कृषक-जीवन ही इसका केन्द्रीभूत विषय है, जिसके चारों ओर संघर्षों और द्वन्द्वों का जाल

बिछा हुआ है। इस दृष्टि से इसे 'आंचलिक बृहत्कथा' कहा जाना अनुचित नहीं होगा। कृति में वर्णित प्रमुख संघर्ष किसान (उत्पादक-वर्ग) और अध्यापक (मध्यबुद्धिजीवी) वर्ग का है। इसी के इर्द-गिर्द दो विचारधाराओं का संघर्ष, दो भूतपूर्व जमींदारों और दो गाँवों का संघर्ष, नये-पुराने मूल्यों तथा सड़क-निर्माण से सम्बद्ध रचनात्मक और विध्वंसक दृष्टियों का संघर्ष, पिता-पुत्र एवं ससुर-दामाद जैसे सम्बन्धों का संघर्ष, गाँव की राजनीति से प्रभावित वैयक्तिक टकरावों के ऐसे विविधवर्णी ग्रामभित्तीय चित्रों से उपन्यास समृद्ध है। इस प्रकार 'गोदान' और 'मैला आँचल' की कड़ी को पूरा करने वाली कृति 'सोनामाटी' इस युग की एक उत्कृष्ट औपन्यासिक उपलब्धि के रूप में उभरी।

इस उपन्यास को आँचलिकता प्रदान करने में प्राकृतिक परिवेश का चित्रण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चालीस-पचास किलोमीटर के वृत्त में फैले बाढ़ग्रस्त करइल के मैदान के चप्पे-चप्पे से लेखक परिचय कराता है। इस क्षेत्र की माटी, कृषि, अनाज, हरियाली, कीचड़, अगहनी सुंदरता, खेल-खलिहान आदि को लेखक ने बारीकी से अंकित किया है। लेखक उपजाऊ करइल के मैदान का मूर्त रूप उपस्थापित करता है। यह करइल तो स्वर्ण-भूमि है, भूमियों का राजा । सुजला सुफला सस्यश्यामला अन्नब्रह्म की साकार धरती। अलंकार रूप में ही नहीं, यहाँ की माटी सचमुच सोना है। बिना खाद-पानी के, कम-से-कम श्रम में उत्तमोत्तम फसल लहलहाती है, तो माघ-फागुन में इस रास्ते से निकलने वाले दूर-दराज के यात्री सिहर उठते हैं। बाद में, बरसात के दिनों में यह पूरा क्षेत्र समुद्र बन जाता है।

सोनामाटी कीचड़ के रूप में नारकीयता प्रदान करती है। रास्ते से चलना तक दूभर हो जाता है। नौका ही यातायात का साधन बनती है। कृषि तो दूर, जीवन ही एक समस्या बन जाता है। परिणामस्वरूप करइल जैसा विस्तृत क्षेत्र बाढ़-बरसात में सभ्य संसार से पृथक् होकर ईश्वर और भाग्य के नाम पर जीता-मरता रहता है। प्राकृतिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में कृषि दशा, बाढ़, यातायात की असुविधा, अभाव, संघर्षमय जीवन, दुर्दम्य जिजीविषा, पृथक् जीवनशैली आदि का अंकन हुआ है। इसी विस्तृत क्षेत्र का जीवन पूर्णत: प्रकृति पर निर्भर है। वह उसे बनाती भी है और बिगाड़ भी देती है।

'समर शेष है' उपन्यास में आँचलिकता

विवेकी राय का नवीनतम उपन्यास 'समर शेष है' पढ़कर फैज काफका की यह उक्ति बरबस याद आती है

– 'यदि हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं और वह हमारे मस्तिष्क पर हथौड़ियों की चोट से हमें जागृत नहीं कर देती तो हम उसे क्यों पढ़ें ?...पुस्तक तो बर्फ तोड़ने की कुल्हाड़ी की भाँति होनी चाहिए, जो हमारे अन्तर्मन के हिमसागर को टुकड़े-टुकड़े कर दे।' यह मापदण्ड सभी पुस्तकों के मूल्यांकन के लिये नहीं अपनाया जा सकता, परन्तु विवेकी राय का प्रासंगिक उपन्यास इस मापदण्ड पर भी उत्कृष्ट प्रमाणित होता है। यह उपन्यास सत्तर के दशक में हुई असफल 'सम्पूर्ण क्रान्ति' की पृष्ठभूमि में लिखा गया है। विवेकी राय की गणना आधुनिक हिन्दी साहित्य के शिखर पुरुषों में होती है। हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है। आधे दर्जन उपन्यासों और लगभग उतने ही कहानी-संग्रहों के रचनाकार विवेकी राय का लगभग चार दशकों से हिन्दी साहित्य में अन्यतम स्थान रहा है। परम्परा की दृष्टि से डॉ. राय प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकार हैं।

'लोकऋण' उपन्यास में आँचलिकता

'लोकऋण' उपन्यास विवेकी राय द्वारा लिखित तीसरा उपन्यास है, जिसका प्रकाशन सन् 1877 में हुआ। उत्तरप्रदेश के गाँव रामपुर की व्यथा-कथा और ग्रामचेतना का आंचलिक उपन्यास में गाँव के अनुभव यात्रा के प्रति एक नया रुझान, एक नयी मानसिकता उत्पन्न करने की कोशिश कर गाँव की पीढ़ी-लिखी पीढ़ी को लोकऋण से ऋण और ग्रामचेतना की महत्वपूर्ण बात है। इस उपन्यास में गाँव की विकृतियों और बिगड़ते माहौल को देख कर डॉ. विवेकी राय ने गांव से निराश होकर उसे विकास की ओर ले जाने का पूरा प्रयत्न किया है। उन्होंने ग्राम-जीवन की एक विडंबना गाँव की बदली जिंदगी, पढ़ी-लिखी पीढ़ी के दायित्व और सरकारी राजनीति के दाव-पेंच, आम आदमी की परेशानियों और समृद्ध वर्ग में पनपती व्यावसायिक वृत्ति के मद्देनजर बदलते समय के सामने उनका सामना एवं विरोध करके जाग्रति का सन्देश देकर ग्रामचेतना को उत्प्रेरित करने का प्रयत्न किया है।

'लोकऋण' उपन्यास में पात्रों की बहुलता है, जिसमें त्रिभुवन का पूरे परिवार का वर्चस्व चित्रित है। त्रिभुवन और उनके भाई धरमू को गांधीवादी नेता के रूप में बताया गया है। गांधी के समय उन्होंने आजादी की जंग में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गिरीश, त्रिभुवन का छोटा भाई है, जो राजनीतिक रूप से भ्रष्टाचारी के रूप में है। वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी का विभागाध्यक्ष है। वह अपने स्वार्थों के लिए ग्रामचेतना को दबोचता है, और त्रिभुवन गाँव का सभापति बन कर गाँव का निर्माण नहीं होने देता। वह राजनीतिक-

अव्यवस्था, बेईमानी और व्यावसायिक वृत्ति के द्वारा शैक्षणिक चेतना को समाप्त करने को बावरा हो जाता है। पुस्तकों की चोरी, नाटक आयोजन, सीताराम से जुड़कर थाणा केवल्टी प्रसंग, सभापति का चुनाव आदि के माध्यम से ग्रामचेतना को टटोलने और गाँव की बनती-बिगड़ती जिन्दगी को जागृत करने का प्रयत्न 'लोकऋण' में किया गया है। जिसका ग्रामीणों की धार्मिक भावना पर गहरा प्रभाव लक्षित होता है।

ग्रामीण जीवन ग्रामीण जीवन में विभिन्न मान्यताएँ देखने को मिलती हैं। आज का युग तकनीक का युग है। आज ग्रामीण लोग शहरों की ओर उन्मुख हैं, फिर भी आज ऐसे कई गाँव हैं जहाँ अंधविश्वास, भूत-प्रेत मानना, जातिभेद रखना, ऐसी कई मान्यताएँ ग्रामीण जन-जीवन में देखने को हमें मिलती हैं। विवेकी राय के उपन्यासों में भी ऐसी कई मान्यताएँ हमारे सामने उभर कर आती हैं। ये मान्यताएँ निम्नांकित हैं

अंधविश्वास

भारतीय समाज में और धर्म व्यवस्था में कुछ विश्वासों, श्रद्धा और मान्यताओं को स्वीकार किया गया है। ग्रामांचलिक जन-जीवन में शकुन-अपशकुन की धारणा, भूत-प्रेतों को मानना, देवता का शरीर में संचार होना, वर्षा होने के लिए और अच्छी फसल पाने के लिए कुछ रोचक उपाय करना जैसे:- महादेव को पानी में डुबोना, गधे के कान में तेल डालना, मनौतियाँ माँगना, भविष्य देखना, मंत्र-तंत्र, दान-पुण्य, पूजा-पाठ में विश्वास करना, पिंडदान के लिए पुत्र का अनिवार्य मानना आदि अंधविश्वासों को विवेकी राय के उपन्यास, कहानी और निबंध कृतियों में बारीकी से देखा जा सकता है। 'लोकऋण' (1977) में ग्रामांचलिक जीवन में स्थित किसी पीरबाबा या देवता के नाम से ताबीज बाँधने से सुख-शांति मिलती है, इस धारणा को दर्शाया गया है।

गांधीवादी धरमू बितनी की आसक्ति से बेचैन हो जाने पर पीर बाबा का ताबीज दाहिनी भुजा पर बाँध कर पाँच बार मंत्र जपता है और मन:शांति प्राप्त करना चाहता है, परंतु कुछ असर न होने पर उसे महात्मा गांधी जी की सलाह याद आती है और वह ताबीज को अंधविश्वास मानकर फेंक देता है। संततिसंबंधी ग्रामांचलों में अनेक धारणाएँ रही हैं। संतान होने पर ही दाम्पत्य सार्थक है, पुत्र वंश का दीपक है, मरणासन्न के मुँह में गंगाजल डालने के लिए पुत्र की आवश्यकता है, पुत्र के बिना पिंडदान हो नहीं सकता, मृतक के अग्निसंस्कार के लिए पुत्र की आवश्यकता है, आदि अंधविश्वासजन्य धारणाओं के कारण पुत्रप्राप्ति के लिए व्रत-उपवास किए जाते हैं, मनौतियाँ माँगी जाती हैं। प्रस्तुत उपन्यास का धरमू और उसकी पत्नी बड़की संतति प्राप्त होने के लिए व्रत-उपवास करते हैं।

'सोनामाटी' (1983) में करइल क्षेत्र में सरोहि के बाजार से खाली हाथ आना अशुभ समझा जाता है। इस संबंध में रामरूप का कहना है-'सरोहि से खाली हाथ नहीं लौटना चाहिए। बाजार से बिना सौदा और जलाशय से खाली बर्तन लिए लौटना जैसे अशुभ है।''समरशेष है-(1988) ग्रामांचलिक जन-जीवन में स्थित छोटे-छोटे प्रसंगों में भविष्य देखना, ज्योतिषियों की सलाह लेना, साधु महाराज की शरण जाना आदि प्रवृत्तियाँ दिखायी देती हैं। इस उपन्यास के असवलिया गाँव के सभापति सुखदेव सिंह का उदण्ड पुत्र दीपक उसी गाँव की एक विधवा मजदूरिन सगुनबो का बकरा चुराता है। इससे निराश होकर सगुनबो बीच माझा गाँव के रसगुल्ला बाबा की शरण लेती है, सिर पटक कर बकरे की चोरी की घटना वर्णित करती है। इस पर रसगुल्ला बाबा कहते हैं-'जा तेरा बकरा वह बाँ-बाँ बोल कर दे देगा। यह अक्षत उसके घर पर छिड़क देना।' इसी के परिणामस्वरूप दीपक को तेज बुखार आता है, उसके सपने में बकरा उसे मार देता है और वह भयभीत होकर सगुनबो का बकरा वापस कर देता है और माफी माँगता है। ग्रामांचलिक जीवन में ऐसी अनेक अंधविश्वासजन्य मान्यताएँ रही हैं जिन्हें ग्रामजीवन में अशुभ माना जाता है।

ज्योतिष-भविष्य

ग्रामांचलिक जन-जीवन में आमतौर से भविष्य और ज्योतिष पर विश्वास रहता है। किसी भी शुभ कार्य के लिए मुहूर्त निकालना या किसी ज्योतिषी के पास जाकर शुभ कार्य के लिए जानकारी हासिल करना, प्रस्थान आदि के लिए शुभ समय देखने की प्रवृत्ति रही है। इस प्रवृत्ति का चित्रण विवेकी राय ने विवेच्य साहित्य में किया है।'सोनामाटी में ग्रामांचलिक जन-जीवन में छोटे-बड़े काम के पूर्व ज्योतिष देखने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। हनुमान प्रसाद के घर से कोइली नामक स्त्री भाग जाती है, जिससे हनुमान प्रसाद विवाह करना चाहते थे। उसे खोजने के लिए वे बेचैन हो जाते हैं। इस स्थिति पर बत्तीसा नामक नौकर छातापुर के सोखा नामक ज्योतिषी से कोइली किसके साथ भाग गयी है, किस दिशा में गयी है, यह देखने की सूचना करते हुए कहता है-'चलकर छातापुर के सोखा से नाम निकलवाया जाय ।कौन भगाया है ? कहाँ है ? वह पैसा ठांठ लेता है तब एक नाम देता है। लेकिन अव्वल दर्जे का नामकढ़वा है।' उनकी धारणा है कि ज्योतिष के आधार पर ही काम की सफलता निर्भर होती है। मनौतियाँ इच्छित कार्य पूरा होने के हेतु आपत्तियों से छुटकारा पाने हेतु एवं फलप्राप्ति हेतु देवी-देवता, पीर बाबा या किसी संत महात्मा से मनौती माँगने की भावना ग्रामवासियों में रहती है।

'सोनामाटी' में हनुमान प्रसाद को चोरी के संदर्भ में जेल जाना पड़ता है, जेल के कष्टमय जीवन से छुटकारा पाने हेतु वे करहिया गाँव की कमच्छा देवी से मनौती माँगते हैं, कि जेल से छूटने के बाद होम-हवन करेंगे। संकटमोचन के बाद मनौती का कार्य पूरा करने की प्रवृत्ति भी इसलिए रहती है, कि यदि इसकी पूर्ति नहीं होगी तो गंभीर परिणामों को भोगना पड़ेगा। इसलिए हनुमान प्रसाद जेल से छूटने के बाद देवी के चबूतरे पर स्थित यज्ञशाला में पंडित की मदद से होम तथा अनुष्ठान करते हैं-'उन्हें एक रुपया थमाया और उन्होंने स्वयं घी देकर होम और संकल्पादि कार्य चटपट संपन्न कर दिया। भस्म का तिलक लगा के बाबू साहब ने देवी का दर्शन किया।'

'समरशेष है' में पंडित संतोषी मास्टर को परीक्षा-नकल विरोधी भाषण देते समय उदंड विद्यार्थियों द्वारा पीटा जाता है, इस घटना में उनका पैर टूट जाता है, प्लास्टर किया जाता है। यह पीड़ा शीघ्र दूर करने हेतु पंडिताइन को गाँव के लोग किसी देवी-देवता से मनौती माँगने की सलाह देते हैं-'किसी अपने देवता की मनौती कर दीजिए कि तीन महीने बाद जब प्लास्टर कटे तो हड्डी जुड़ी हुई मिले और पंडिताइन ने आँचल पसार कर रसगुल्ला को गहराया था। संकट-निवारण के बाद पंडिताइन पंडित को लेकर मनौती पूर्ति के लिए रसगुल्ला महाराज के आश्रम में जाती है।

इस तरह मनौतियों से संकट दूर करने में देवता की सहायता मिलती है, ऐसी भावना ग्रामाँचलिक जीवन में रही है, इसलिए श्रद्धा के साथ इनकी पूर्ति करना अपना कर्तव्य मानते हैं। मनौती माँगने से कार्य सफल हो जाता है, यह अंधविश्वासी विचार है। आज ग्रामाँचल में यह अंधविश्वासी रूप केवल अज्ञानियों एवं अशिक्षितों में ही है, ऐसा नहीं है, शिक्षितों में भी यह विचार प्रबल हो रहा है, इसका अच्छा उदाहरण पंडित संतोषी का परिवार रहा है। विवेकी राय के विवेच्य साहित्य में इस अंधविश्वासी रूप का यथार्थ चित्रण मिलता है।

सामाजिकता सामाजिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत ग्रामाँचलिक जन-जीवन में अंधविश्वास, ज्योतिष और भविष्य में विश्वास, मनौतियाँ, भूत-प्रेत, चुडैल, झाड़-फूँक, देवी-देवता के बारे में धारणा, जातिभेद आदि ग्रामीण मान्यताएँ देखने को मिलती हैं। ग्रामांचलिक जन-जीवन में स्थित ताबीज बाँधना, संतान प्राप्ति के लिए व्रत-मनौती माँगना, ज्योतिष विद्या में विश्वास करना, साइति देखना, भूत-प्रेत की छाया में विश्वास रखना, गुप्त धन संबंधी अनेक गलत मान्यताएँ प्रस्तुत करना, प्रसव के स्थल संबंधी धारणा को मन में बाँधना, ओझा पर विश्वास करना आदि का चित्रण 'बबूल', लोकऋण', 'सोनामाटी', 'मंगलभवन' में चित्रित हैं।